वरदराज का पुनः प्रयास

(उत्प्रेरक कहानी)

12

बहुत पुरानी बात है। गुरुकुल में वरदराज नाम का एक बालक पढ़ता था। उसका मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता था। सभी विद्यार्थी उसका मजाक उड़ाते थे। कोई उसे 'बुद्धू' कहता तो कोई '*मूर्खराज*'। कुछ सहपाठी कहते थे कि जब भगवान बुद्धि बाँट रहे थे, तब वरदराज सो रहा था। उसे स्वयं भी यही लगता था कि वह *बुद्धू* है, मूर्ख है। इसलिए वह पढ़-लिख नहीं सकता।

गुरुजी उसे बहुत समझाते, लेकिन वरदराज की समझ में कुछ नहीं आता था। एक दिन गुरुजी ने *निराश* होकर कहा– "बेटे वरदराज! पढ़ना-लिखना तुम्हारे वश की बात नहीं। लगता है ईश्वर ने तुम्हारे भाग्य में विद्या लिखी ही नहीं है। इससे तो यही अच्छा है कि तुम अपने गाँव लौट जाओ। वहाँ अपने पिता के काम में हाथ बँटाओ।"

गुरुजी की बात सुनकर वरदराज को बड़ा दुःख हुआ। वह अपने साथियों से विदा लेकर तथा गुरुजी के पाँव छूकर अपने घर की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह थक गया। उसे भूख भी सताने लगी। रास्ते में खाने के लिए गुरुजी ने उसे थोड़ा सा *सत्तू* दिया था। उसे उस सत्तू की याद आई। उसने अपने थैले से सत्तू निकाला और एक ओर बैठकर उसे खाने लगा। कुछ दूरी पर गाँव की स्त्रियाँ कुएँ से पानी भर रही थीं। वह पानी पीने वहाँ पहुँचा।

उसने स्त्रियों से पीने के लिए पानी माँगा। जब स्त्रियाँ रस्सी से पानी खींच रही थीं, अचानक उसका ध्यान कुएँ की

जगत पर बने गड्ढों की ओर गया। वह स्त्रियों से बोला–"घड़े रखने के लिए आप लोगों ने कितने अच्छे गड्ढे बनाए हैं!"

उसकी भोली बातें सुनकर स्त्रियों ने उसे समझाया कि ये गड्ढे बार-बार घड़ों को रखने से अपने आप बन गए हैं! किसी ने इन्हें नहीं बनाया है। वरदराज के *आश्चर्य* का ठिकाना न रहा। उसने पूछा, "क्या सचमुच ही ये गड्ढे अपने आप बने हैं? क्या मिट्टी के घड़ों में इतनी ताकत है कि वे पत्थर को घिस दें?"

स्त्रियों ने बताया–"हाँ बेटा! यह देखो, कुएँ की जगत पर रस्सी ने भी घिस-घिसकर निशान बना दिए हैं।"

वरदराज ने मन में सोचा कि "जब मिट्टी के घड़े और कोमल रस्सी से पत्थर घिस सकता है, तो बार-बार अभ्यास करने से क्या मैं विद्या प्राप्त नहीं कर सकता?"

मन में यह बात आते ही उसकी निराशा और दुःख दूर हो गया। उसने मन में ठान लिया–"मैं खूब *परिश्रम* करूँगा और बार-बार अभ्यास करूँगा।"

वह गुरुकुल लौट आया। गुरुजी को प्रणाम करके उसने उन्हें अपने मन की बात बताई। सारी बात सुनकर गुरुजी *प्रसन्न* हो उठे। उन्होंने उसे पुनः पढ़ाना शुरू किया। वरदराज खूब मन लगाकर पढ़ने लगा। वह अभ्यास के *महत्व* को समझ चुका था। कुएँ की घटना ने उसका *कायाकल्प* कर दिया था।

बड़े होकर बालक वरदराज संस्कृत भाषा के *प्रकांड विद्वान* बने। इनकी ख्याति सारे भारत में फैल गई। इन्होंने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा।

शब्द-भंडार

बुद्धू — मूर्ख *(foolish)*,
निराश — मायूस *(desperate)*,
जगत — संसार *(world)*,
परिश्रम — मेहनत *(hardwork)*,
महत्व — महिमा *(importance)*,
प्रकांड विद्वान — अत्यधिक पढ़ा-लिखा *(scholar)*।
मूर्खराज — मूर्खों का राजा *(king of stupid)*,
सत्तू — भुने हुए जौं का आटा *(barley)*,
आश्चर्य — हैरानी *(amazed)*,
प्रसन्न — खुश *(happy)*,
कायाकल्प — पूर्ण परिवर्तन *(full transition)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

गुरुकुल	विद्यार्थी	सत्तू	स्त्रियाँ
प्रकांड	विद्वान	व्याकरण	गड्ढे

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) वरदराज कहाँ पढ़ता था?

(ख) सभी विद्यार्थी वरदराज को मूर्खराज क्यों कहते थे?

(ग) क्या देखकर वरदराज को आश्चर्य हुआ?

(घ) वरदराज आगे चलकर क्या बने?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) वरदराज को स्वयं यह लगता था कि वह ..... है।

☐ मूर्ख ☐ बुद्धिमान ☐ कमजोर

(ख) वरदराज रास्ते में एक ..... में पानी पीने पहुँचा।

☐ नगर ☐ गाँव ☐ आश्रम

(ग) वह बालक बड़ा होकर ..... भाषा का प्रकांड विद्वान बना।

☐ उर्दू ☐ हिंदी ☐ संस्कृत

2. किसने, किससे कहा?

(क) "बेटे वरदराज! पढ़ना-लिखना तुम्हारे वश की बात नहीं।" ....

(ख) "घड़े रखने के लिए आपने अच्छे गड्ढे बनाए हैं।" ....

(ग) "बेटा! ये गड्ढे अपने आप बने हैं, हमने नहीं बनाए हैं।" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) निराश होकर गुरुजी ने वरदराज से क्या कहा?

(ख) वरदराज ने स्त्रियों से क्या कहा?

(ग) कुएँ की जगत पर निशान कैसे बन गए थे?

भाषा-ज्ञान

- शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

1. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) परिश्रम = ... (ख) मूर्ख = ...

(ग) निराशा = ... (घ) दु:खी = ...

(ङ) विद्वान = ... (च) गुरु = ...

2. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) आश्चर्य = ...

(ख) विद्वान = ...

(ग) निराश = ...

क्रियात्मक गतिविधि

- ऐसे तीन कार्य लिखें जिन्हें आप अभ्यास के द्वारा सीखना चाहते हैं–

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....